M.A. Sem-II CC-3

दस प्रकीर्णक

प्रकीर्णक को परिभाषित करते हुए उसके भेदों को संक्षेप में वर्णन करें।

7

प्राकृत आगम साहित्य के टीकाकारों का अभिमत है कि दस प्रकीर्णक ग्रंथों की रचना तीर्थंकरों द्वारा दिये गये उपदेशों के आधार पर की गयी है। इन उपदेशों को अनेक विद्वान मुनियों द्वारा सुना गया तथा उसे सुनकर अनेक मुनियों द्वारा जिन ग्रंथों की रचना की गयी है वे ही प्रकीर्णक हैं। प्रकीर्णक ग्रंथों की संख्या अनेकों हैं, किन्तु वल्लभी वाचना के समय दस ग्रंथों को ही प्रकीर्णक आगम में सम्मिलित किया गया है।

(1) चउसरण (चतुःशरण) इस ग्रंथ में 63 गाथाएं हैं। इसमें छह आवश्यकों के निर्देश के अनुसार अरहंत, सिद्ध, साधु और जिनधर्म इन चार को शरण मानकर पाप के प्रति निन्दा और पुण्य के प्रति अनुराग प्रकट किया गया है, यह रचना वीरभद्र कृत मानी जाती है।

(2) आउरपच्चक्खाण (आतुर प्रत्याख्यान) → इस ग्रंथ में 70 गाथाएँ हैं। बालमरण और पण्डितमरण के संबंध में विस्तृत विवेचन किया गया है। प्रत्याख्यान - परित्याग को मोक्ष प्राप्ति का साधन माना गया है। इस ग्रंथ के रचयिता वीरभद्र है। इस ग्रंथ में पद्य के अतिरिक्त कुछ अंश गद्य में भी पाये जाते हैं।

(3) महापच्चक्खाण (महाप्रत्याख्यान) इस ग्रंथ में 142 अनुष्टुप पद्यों द्वारा दुश्चरित्र की निन्दा, सच्चरित्रात्मक भावनाओं, व्रतों एवं आराधनाओं पर जोर दिया गया है। इस रचना पूर्वोक्त आतुर प्रत्याख्यान का रूप ही है।

(4) भत्तपइण्णा (भक्तपरिज्ञा) → इस ग्रंथ में 172 गाथाओं में परलोक सिद्धि का निरूपण किया गया है। भक्तपरिज्ञा, इंगिनी और पादोपगमन रूप मरण भेदों का स्वरूप बताया गया है। बन्ध मोक्ष का कारण मन ही है। अतः मन को वश में करने के लिए अनेक दृष्टान्तों का प्रयोग किया गया है। मन को बन्दर की उपमा देकर उसका यथार्थस्वरूप उपस्थित किया है।

(5) तंदुलवेयालिय (तंदुलवैचारिक) → इस ग्रंथ में 586 गाथाओं में लिखी गयी गद्य-पद्य मिश्रित रचना है। इसमें गौतम और महावीर के बीच हुए प्रश्नोत्तर के रूप में जीव की गर्भावस्था, आहार विधि, बाल जीवन क्रीड़ा आदि अवस्थाओं का वर्णन है। प्रसंगवश स्त्रियों के स्वरूप का निरूपण अनेक रूपकों द्वारा किया गया है।

Scanned with CamScanner

(6) संथारक (संस्तारक) – इस ग्रंथ में 123 गाथाएँ है। इसमें साधु के लिए अन्त समय में तृण का आसन – संथारा ग्रहण कर समाधिमरण धारण करने के लिए विधि वर्णित है। मृत्यु के समय में स्थिर परिणाम रखकर मण्डितमरण द्वारा ही सद्‌गति प्राप्त की जा सकती है।

(7) गच्छायार (गच्छाचार) इस ग्रंथ में 137 गाथाएँ है। इस में मुनि और आर्यिकाओं के गच्छ में रहने एवं तत्सम्बन्धी विनय तथा नियमोपनियम पालन की विधि बतलायी गयी है। इसमें निर्ग्रन्थों और निर्ग्रन्थिनियों को एक दूसरे के प्रति पर्याप्त सतर्क रहने तथा कामवासना को वश में रखने का निरूपण किया गया है। मन में स्थिर रहने पर भी संयोगो से अपने को सर्वदा बचाना हितकर होता है। जो मुनि अपना संयम खो बैठते हैं, उनकी अवस्था उसी प्रकार की होती है जिस प्रकार श्लेष में लिपटी मक्खी की।

(8) गणिविज्जा (गणिविद्या) – इसमें 82 गाथाओं के माध्यम से दिवस तिथि, नक्षत्र, ग्रह, मुहूर्त, शकुन आदि का विचार किया गया है। ज्योतिष की दृष्टि से यह ग्रंथ उपयोगी है। इसमें लग्न आदि का भी उल्लेख पाया जाता है।

(9) देविंदथव (देवेन्द्र स्तव) – इस ग्रंथ में 307 गाथाएँ हैं। इसमें श्रावक जो चौबीसों तीर्थंकरों की वन्दना कर स्तुति करता है। स्तुतिकार प्रश्नोत्तर में कल्पों और कल्पातीत देवों का वर्णन करता है। इस के रचयिता वीरभद्र माने जाते हैं।

(10) मरणसमाहि (मरणसमाधि) – यह सबसे बड़ा प्रकीर्णक माना जाता है। इसमें 663 गाथाएँ है। जिसमें आराधना, आराधक, आलोचना, संल्लेखना, क्षमायाचना आदि चौदह द्वारों से समाधिमरण की विधि बतलायी गयी है। इसमें बारह भावनाओं का भी निरूपण सुन्दर ढंग से किया गया है। इसके अतिरिक्त इसमें आचार्य के गुण, तप, एवं ज्ञान की महिमा भी इस ग्रंथ में निरूपित हैं।

Scanned with CamScanner